# अध्याय 11: बाजार दर्शन

**विषय-सूची** 6 प्रश्नावली · 15 प्रश्न


| | | |
|---|---|---|
| प्रश्नावली 11.1 | पाठ के साथ | 5 प्रश्न |
| प्रश्नावली 11.2 | पाठ के आसपास | 3 प्रश्न |
| प्रश्नावली 11.3 | आपसदारी | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 11.4 | भाषा की बात | 4 प्रश्न |
| प्रश्नावली 11.5 | चर्चा करें | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 11.6 | शब्द-छवि | 1 प्रश्न |


## प्रश्नावली 11.1 — पाठ के साथ

### प्रश्न 1

बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

**हल**

जादू चढ़ने पर असर:

जब जेब भरी हो और मन खाली हो, तब बाजार का जादू सबसे अधिक काम करता है। व्यक्ति को लगता है कि उसके पास काफी नहीं है, और चाहिए, और चाहिए।

बाजार का रूपी जादू आँख की राह काम करता है — व्यक्ति सभी चीज़ें जरूरी और आराम बढ़ाने वाली मालूम होती हैं।

व्यक्ति असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल हो जाता है। वह बिना ज़रूरत के सामान खरीदता है और अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के अनुपात में खरीदारी करता है।

जादू उतरने पर असर:

जादू की सवारी उतरने पर पता चलता है कि फैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है।

व्यक्ति को बोध होता है कि थोड़ी देर के लिए स्वाभिमान को सेंक मिली थी, पर वास्तव में अभिमान की गिल्टी को और खुराक मिली।

अंततः बिना ज़रूरत खरीदी गई वस्तुएँ व्यर्थ सिद्ध होती हैं और मनुष्य पछताता है।

**उत्तर: बाजार का जादू चढ़ने पर व्यक्ति तृष्णा और असंतोष से ग्रस्त होकर फ़िज़ूलखर्ची करता है; जादू उतरने पर पछतावा होता है और ज्ञात होता है कि वह सब अनावश्यक था।**

### प्रश्न 2

बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

**हल**

भगत जी का सशक्त पहलू:

भगत जी चूरन बेचते हैं और वर्षों से कभी छः आने पैसे से ज़्यादा नहीं कमाते। उनका मन बाजार की चकाचौंध से अडिग रहता है।

वे खुली आँख से बाजार में जाते हैं, सभी से हँसकर मिलते हैं, किंतु बड़े-बड़े फैंसी स्टोरों पर नहीं रुकते — केवल जीरा और काला नमक जैसी ज़रूरी चीजें एक छोटी पंसारी की दुकान से लेते हैं।

लेखक के अनुसार उन पर बाजार का जादू वार नहीं कर पाता। पैसे की व्यंग्य-शक्ति उनके सामने चूर-चूर हो जाती है।

उनके व्यक्तित्व में विद्रोह नहीं, प्रसन्नता है — क्योंकि कोई रिक्त भीतर नहीं है।

समाज में शांति-स्थापना:

हाँ, भगत जी का आचरण समाज में शांति स्थापित करने में सहायक हो सकता है। वे 'संतोषी जन सदा सुखी' का जीवंत उदाहरण हैं।

जब व्यक्ति अपनी वास्तविक ज़रूरतों को पहचानकर बाजार में जाएगा, तो न ईर्ष्या होगी, न असंतोष। इससे समाज में भाईचारा और सद्भाव बना रहेगा।

उनके आचरण से यह संदेश मिलता है कि संचय की तृष्णा नहीं, संतुष्टि ही वास्तविक शक्ति है।

---

**उत्तर: भगत जी का सशक्त पहलू है — ज़रूरत-भर ही खरीदने की निस्पृह संतुष्टि और बाजार की चकाचौंध से अप्रभावित रहने की आत्मिक शक्ति। उनका यह आचरण समाज में ईर्ष्या व असंतोष कम करके शांति स्थापित करने में सहायक हो सकता है।**

---

## प्रश्न 3

'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?

**हल**

बाजारूपन का तात्पर्य:

लेखक के अनुसार 'बाजारूपन' वह स्थिति है जब बाजार में कपट और स्वार्थ का बोलबाला हो जाता है। जो व्यक्ति बिना ज़रूरत के, केवल 'पर्चेजिंग पावर' के अहंकार में खरीदारी करता है, वह बाजार की शैतानी शक्ति को बढ़ाता है।

ऐसे लोग बाजार को 'बाजारूपन' की ओर धकेलते हैं — यानी कपट बढ़ाते हैं, सद्भाव घटाते हैं, और लोग आपस में भाई-भाई न रहकर कोरे ग्राहक और बेचक बन जाते हैं।

बाजार की सार्थकता:

बाजार को सार्थकता वही व्यक्ति देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है — अर्थात जिसका मन खाली नहीं है, जो अपनी वास्तविक आवश्यकता लेकर बाजार में जाता है।

ऐसा व्यक्ति बाजार का सच्चा लाभ उठाता है और बाजार को भी सच्चा लाभ देता है। बाजार की असली कृतार्थता है — आवश्यकता के समय काम आना।

भगत जी इसके सर्वोत्तम उदाहरण हैं — वे जीरा और काला नमक लेने जाते हैं, उतना लेकर संतुष्ट लौटते हैं।

**उत्तर: 'बाजारूपन' का तात्पर्य है बाजार में कपट और स्वार्थ की वृद्धि। वास्तविक आवश्यकता पहचानकर बाजार में जाने वाले व्यक्ति ही बाजार को सार्थकता देते हैं; बाजार की असली कृतार्थता आवश्यकता के समय काम आने में है।**

---

## प्रश्न 4

बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता; वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

**हल**

सहमति के पक्ष में:

यह सत्य है कि बाजार सभी को समान दृष्टि से देखता है। अमीर-गरीब, जाति-धर्म, स्त्री-पुरुष — सभी एक ही पैमाने पर परखे जाते हैं — उनकी क्रय शक्ति।

इस अर्थ में बाजार एक व्यावहारिक समता लाता है — वह भेदभाव न करके केवल मूल्य चुकाने की क्षमता देखता है।

असहमति के पक्ष में:

किंतु यह समता केवल सतही है। जिनके पास पैसा नहीं, वे बाजार से बाहर हो जाते हैं। वास्तव में यह क्रय शक्ति की असमानता को और गहरा करता है।

इसके अतिरिक्त, लेखक यह भी संकेत करते हैं कि बाजार कभी-कभी आवश्यकता को शोषण का रूप दे देता है — जहाँ ज़रूरतमंद शिकार बनता है और कपटी व्यापारी लाभ उठाता है।

अतः बाजार की यह 'समता' वास्तविक सामाजिक समता नहीं, बल्कि वह एक आर्थिक व्यवस्था है जो धन-शक्ति को सर्वोपरि मानती है।

---

**उत्तर: बाजार की क्रय-शक्ति आधारित समता सतही है — यह जाति-धर्म के भेद तो मिटाती है, किंतु आर्थिक असमानता को और गहरा करती है; ज़रूरतमंद इसमें शिकार बनता है।**

---

## प्रश्न 5

आप अपने तथा समाज से कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें — (क) जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ। (ख) जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।

**हल**

(क) जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ:

लेखक स्वयं एक उदाहरण देते हैं — जब पास से धूल उड़ाती मोटर निकलती है, तो मन में विचार आता है कि मोटर वाले और पैदल चलने वाले की स्थिति में कितना अंतर है। पैसे की व्यंग्य-शक्ति यहाँ साफ दिखती है।

समाज में भी यह दिखता है जब किसी धनी व्यक्ति को तुरंत चिकित्सा, सेवा या सम्मान मिल जाता है, जबकि सामान्य व्यक्ति प्रतीक्षा करता रहता है।

(ख) जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई:

भगत जी का उदाहरण यहाँ प्रासंगिक है — पैसा उनके सामने 'भीख माँगता' था, किंतु उनके मन में उसके प्रति कोई आकर्षण न था। पैसे की व्यंग्य-शक्ति उनके सामने चूर-चूर हो गई।

जब कोई बीमारी असाध्य हो, कोई प्रिय व्यक्ति चला जाए, या रिश्ते टूट जाएँ — तब पैसे की कोई भूमिका नहीं रहती। ये प्रसंग बताते हैं कि जीवन का वास्तविक मूल्य धन से परे है।

---

**उत्तर: पैसा तब शक्ति दिखाता है जब वह भौतिक सुविधा और सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाता है; किंतु भगत जी जैसे संतुष्ट और जीवन की गहरी अनुभूतियों (प्रेम, स्वास्थ्य, रिश्ते) के सामने पैसे की शक्ति निष्प्रभावी हो जाती है।**

## प्रश्नावली 11.2 — पाठ के आसपास

### प्रश्न 1

बाजार दर्शन पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है? आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते/मानती हैं?

**हल**

पाठ में तीन प्रकार के ग्राहकों का वर्णन है:

1. खाली मन वाला ग्राहक — जिसकी जेब भरी हो और मन खाली हो। ऐसा व्यक्ति बाजार के जादू का सबसे बड़ा शिकार होता है। वह बिना ज़रूरत के सब कुछ खरीदना चाहता है और अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के अहंकार में खर्च करता है।
2. लक्ष्य-पूर्ण मन वाला ग्राहक — जो जानता है कि उसे क्या चाहिए। वह बाजार का सच्चा लाभ उठाता है और बाजार को सार्थकता देता है। भगत जी इस श्रेणी के प्रतिनिधि हैं।
3. बंद मन वाला ग्राहक — जो हठपूर्वक बाजार से विमुख रहता है। लेखक इसे भी उचित नहीं मानते — यह जड़ता है, वास्तविक संयम नहीं।

स्वयं की श्रेणी के बारे में उत्तर व्यक्तिगत होगा। आदर्श है कि हम लक्ष्य-पूर्ण मन वाले ग्राहक बनें — अपनी वास्तविक आवश्यकता पहचानकर बाजार का उपयोग करें।

**उत्तर: पाठ में तीन प्रकार के ग्राहक हैं — खाली मन (बाजार का शिकार), लक्ष्य-पूर्ण मन (बाजार को सार्थकता देने वाला, जैसे भगत जी), और बंद मन (हठपूर्वक विमुख)। आदर्श ग्राहक लक्ष्य-पूर्ण मन वाला होता है।**

### प्रश्न 2

लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

**हल**

लेखक का संकेत:

लेखक कहते हैं कि जब बाजार में 'बाजारूपन' बढ़ता है, तो ग्राहक और विक्रेता कोरे ग्राहक और बेचक बन जाते हैं — मानो दोनों एक-दूसरे को ठगने की घात में हों।

ऐसे बाजार में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है — कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है।

सहमति के तर्क:

हाँ, यह विचार सत्य है। जब कोई व्यक्ति किसी आवश्यक वस्तु की तत्काल आवश्यकता में होता है (जैसे दवाई, पानी, आपातकाल में परिवहन), तो विक्रेता उसकी मजबूरी का लाभ उठाकर अधिक मूल्य माँगता है।

गाँव-देहात के बाजारों में नकली सामान बेचना भी इसी का उदाहरण है — जहाँ अज्ञानी ग्राहक की आवश्यकता का शोषण होता है।

एकाधिकार (monopoly) की स्थिति में यह और भी स्पष्ट होता है — जब विकल्प न हो, तो विक्रेता मनमाना मूल्य ले सकता है।

निष्कर्ष: अतः लेखक का यह संकेत बिल्कुल उचित है कि आवश्यकता कभी-कभी शोषण का रूप धारण कर लेती है। इससे बचने के लिए उपभोक्ता जागरूकता और नैतिक व्यापार नीति दोनों आवश्यक हैं।

**उत्तर: हाँ, बाजार में आवश्यकता कभी-कभी शोषण बन जाती है — जैसे एकाधिकार में मनमाना मूल्य, नकली सामान, और मजबूरी में ऊँचे दाम। इससे बचाव के लिए उपभोक्ता जागरूकता और नैतिक व्यापार ज़रूरी हैं।**

## प्रश्न 3

स्त्री माया न जोड़े — यहाँ माया शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति-प्रदत्त नहीं, बल्कि परिस्थितिवश है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ हैं जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती हैं?

### हल

माया शब्द का संकेत:

पाठ में 'स्त्री माया न जोड़े तो क्या मैं जोड़ूँ?' — यहाँ 'माया' शब्द धन-संपत्ति, सामान और घरेलू सुरक्षा के संचय की ओर संकेत करता है।

लेखक इसे स्त्री के स्वभाव से जोड़ते हैं, किंतु साथ ही यह भी मानते हैं कि 'पत्नी की ओट' में वास्तव में पैसे की गरमी (मनीबैग की एनर्जी) काम करती है।

परिस्थितिवश माया जोड़ना:

आर्थिक असुरक्षा — परंपरागत समाज में स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता सीमित थी, इसलिए वह घर में बचत और संग्रह को ज़रूरी मानती थी।

भविष्य की अनिश्चितता — बच्चों की शिक्षा, बीमारी, अकाल-दुर्भिक्ष जैसी स्थितियों के लिए स्त्री बचत और संग्रह को सुरक्षा-कवच मानती है।

सामाजिक दबाव — पारिवारिक और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए घर में सामान, आभूषण और धन रखना स्त्री की ज़िम्मेदारी समझा जाता है।

निर्भरता — जब स्त्री आर्थिक रूप से परावलंबी हो, तो संग्रह ही उसकी एकमात्र शक्ति और सुरक्षा बन जाती है।

अतः माया जोड़ना स्त्री की प्रकृति नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों की देन है जो उसे असुरक्षित और परावलंबी बनाती हैं।

**उत्तर: 'माया' यहाँ धन-संपत्ति और सामान के संचय का संकेत है। स्त्री को आर्थिक असुरक्षा, भविष्य की अनिश्चितता, सामाजिक दबाव और परावलंबिता जैसी परिस्थितियाँ माया जोड़ने के लिए विवश करती हैं — यह उसकी प्रकृति नहीं, परिस्थिति की देन है।**

## प्रश्नावली 11.3 — आपसदारी

### प्रश्न 1

जरूरत-भर जीरा वहाँ से ले लिया कि फिर सारा चौक उनके लिए आसानी से नहीं के बराबर हो जाता है — भगत जी की इस संतुष्ट निस्पृहता की कबीर की इस सूक्ति से तुलना कीजिए — चाह गई चिंता गई मनुआँ बेपरवाह जाके कछु न चाहिए सोइ सहंसाह। — कबीर

**हल**

भगत जी की निस्पृहता:

भगत जी केवल अपनी ज़रूरत (जीरा और काला नमक) लेकर संतुष्ट हो जाते हैं। सारे चौक-बाजार की चाँदनी उनके लिए 'नहीं के बराबर' हो जाती है।

वे बाजार में जाते हैं, खुली आँखों से देखते हैं, सभी से मिलते हैं, किंतु किसी भी फैंसी स्टोर पर नहीं रुकते। उनका मन पूर्ण है, इसलिए बाजार उन्हें रिक्तता का बोध नहीं करा सकता।

कबीर की सूक्ति का भाव:

कबीर कहते हैं — जब चाह (इच्छा) चली जाती है, तो चिंता भी चली जाती है और मन बेपरवाह हो जाता है। जिसे कुछ नहीं चाहिए, वही सच्चा सम्राट है।

तुलना:

भगत जी और कबीर दोनों एक ही जीवन-दर्शन के प्रतिनिधि हैं — 'अपरिग्रह' (संग्रह न करना) और वास्तविक आवश्यकता से अधिक न लेना।

भगत जी की निस्पृहता व्यावहारिक जीवन में कबीर की सूक्ति का साकार रूप है। कबीर जहाँ सैद्धांतिक स्तर पर इच्छाओं के त्याग की बात करते हैं, वहीं भगत जी उसे अपने दैनिक आचरण में जीते हैं।

दोनों के लिए 'संपूर्णता' बाहरी संग्रह में नहीं, भीतरी तृप्ति में है।

**उत्तर: भगत जी की संतुष्ट निस्पृहता कबीर की सूक्ति का जीवंत उदाहरण है — दोनों के अनुसार वास्तविक स्वतंत्रता और सुख बाहरी संग्रह में नहीं, भीतरी तृप्ति और चाह के अभाव में है।**

## प्रश्नावली 11.4 — भाषा की बात

### प्रश्न 1

विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग भी अपना रूप बदलता रहता है — कभी औपचारिक रूप में आती है तो कभी अनौपचारिक रूप में। पाठ में से दोनों प्रकार के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए।

**हल**

औपचारिक भाषा के उदाहरण (विचार-प्रधान, गंभीर गद्य):

1. 'पैसे की उस पर्चेजिंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है।' — यहाँ लेखक सैद्धांतिक विश्लेषण कर रहा है।
2. 'बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।' — निबंध की शैली में निष्कर्ष-वाक्य।
3. 'वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है।' — गंभीर विचार-मंथन।

अनौपचारिक भाषा के उदाहरण (संवाद और किस्सागोई शैली):

1. 'मित्र बोले — कुछ न पूछो। बाजार है कि शैतान का जाल है?' — संवाद-शैली, बोलचाल की भाषा।
2. 'मैंने कहा — यह क्या? बोले — यह जो साथ थीं।' — सरल संवाद।
3. 'अजी आओ भी।' — बाजार का आमंत्रण व्यक्त करते हुए बोलचाल की भाषा।

**उत्तर: औपचारिक: (1) 'पर्चेजिंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है', (2) 'बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना', (3) 'वह अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है।' अनौपचारिक: (1) 'बाजार है कि शैतान का जाल है?', (2) 'यह क्या? — यह जो साथ थीं।', (3) 'अजी आओ भी।'**

### प्रश्न 2

पाठ में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जहाँ लेखक अपनी बात कहता है; कुछ वाक्य ऐसे हैं जहाँ वह पाठक-वर्ग को संबोधित करता है। सीधे तौर पर पाठक को संबोधित करने वाले पाँच वाक्यों को छाँटिए और सोचिए कि ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में मददगार होते हैं?

**हल**

पाठक को सीधे संबोधित करने वाले पाँच वाक्य:

1. 'पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए, पर माल-असबाब मकान-कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं।'
2. 'लेकिन ठहरिए। इस सिलसिले में एक और भी महत्त्व का तत्त्व है, जिसे नहीं भूलना चाहिए।'
3. 'पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है।'
4. 'कहीं आप भूल न कर बैठिएगा।'
5. 'इन पंक्तियों को लिखने वाला मैं चूरन नहीं बेचता हूँ। जी नहीं, ऐसी हलकी बात भी न सोचिएगा।'

इन संबोधनों का प्रभाव:

हाँ, ऐसे संबोधन पाठक को रचना से जोड़ते हैं और पाठक यह अनुभव करता है कि लेखक सीधे उससे बात कर रहा है। इससे रचना में नाटकीयता और जीवंतता आती है। पाठक निष्क्रिय श्रोता नहीं रहता, बल्कि विमर्श में सक्रिय भागीदार बन जाता है।

**उत्तर: पाँच उदाहरण: (1) 'पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए', (2) 'लेकिन ठहरिए', (3) 'पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है', (4) 'कहीं आप भूल न कर बैठिएगा', (5) 'ऐसी हलकी बात भी न सोचिएगा'। ये संबोधन पाठक को सक्रिय भागीदार बनाते हैं और रचना को जीवंत बनाते हैं।**

### प्रश्न 3

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए — (क) पैसा पावर है। (ख) पैसे की उस पर्चेजिंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है। (ग) मित्र ने सामने मनीबैग फैला दिया। (घ) पेशगी ऑर्डर कोई नहीं लेते। ऊपर दिए गए इन वाक्यों की संरचना तो हिंदी भाषा की है लेकिन वाक्यों में एकाध शब्द अंग्रेजी भाषा के आए हैं। इस तरह के प्रयोग को कोड मिक्सिंग कहते हैं। अब तक आपने जो पाठ पढ़े उनमें से ऐसे कोई पाँच उदाहरण चुनकर लिखिए। यह भी बताइए कि आगत शब्दों की जगह उनके हिंदी पर्यायों का ही प्रयोग किया जाए तो संप्रेषणीयता पर क्या प्रभाव पड़ता है।

**हल**

कोड मिक्सिंग के पाँच उदाहरण (बाज़ार दर्शन सहित अब तक पढ़े पाठों से):

1. 'पैसा पावर है।' (पावर = शक्ति)
2. 'पैसे की उस पर्चेजिंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है।' (पर्चेजिंग पावर = क्रय शक्ति)
3. 'मित्र ने सामने मनीबैग फैला दिया।' (मनीबैग = पर्स/बटुआ)
4. 'पेशगी ऑर्डर कोई नहीं लेते।' (ऑर्डर = आदेश/माँग)
5. 'बड़े-बड़े फैंसी स्टोर पड़ते हैं।' (फैंसी स्टोर = सजावटी दुकानें)

संप्रेषणीयता पर प्रभाव:

यदि इन आगत (विदेशी) शब्दों की जगह हिंदी पर्यायों का प्रयोग किया जाए, तो:

— भाषा अधिक औपचारिक और शास्त्रीय लगेगी।

— 'पर्चेजिंग पावर' की जगह 'क्रय शक्ति' और 'मनीबैग' की जगह 'बटुआ' कहने से भाव तो समान रहेगा, किंतु उस विशेष सांस्कृतिक-आर्थिक ध्वनि का लोप हो जाएगा जो अंग्रेजी शब्द के साथ आती है।

— इससे पाठ की सहजता और बोलचाल वाला प्रवाह कुछ घट जाएगा, पर हिंदी की शुद्धता बढ़ेगी।

**उत्तर: कोड मिक्सिंग के पाँच उदाहरण: पावर, पर्चेजिंग पावर, मनीबैग, ऑर्डर, फैंसी स्टोर। हिंदी पर्यायों से भाषा शुद्ध होगी किंतु उन शब्दों की विशेष सांस्कृतिक ध्वनि और सहज प्रवाह घट जाएगा।**

### प्रश्न 4

नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश पर ध्यान देते हुए उन्हें पढ़िए — (क) निर्बल ही धन की ओर झुकता है। (ख) लोग संयमी भी होते हैं। (ग) सभी कुछ तो लेने को जी होता था। ऊपर दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश 'ही', 'भी', 'तो' निपात हैं जो अर्थ पर बल देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। आप निपात (ही, भी, तो) का प्रयोग करते हुए तीन-तीन वाक्य बनाइए। साथ ही ऐसे दो वाक्यों का भी निर्माण कीजिए जिसमें ये तीनों निपात एक साथ आते हों।

**हल**

'ही' का प्रयोग (बल देने के लिए):

1. वही व्यक्ति सफल होता है जो परिश्रम करता है।
2. बाजार में जाना ही था तो मन भरकर जाते।

3. भगत जी को ही बाजार का जादू नहीं चल सका।

'भी' का प्रयोग (समावेश/अतिरिक्तता):

1. वह बाजार गया और खाली हाथ भी लौटा।
2. पैसे की व्यंग्य-शक्ति भगत जी पर भी काम न कर सकी।
3. संयमी व्यक्ति बाजार में भी अपना संतुलन बनाए रखता है।

'तो' का प्रयोग (बल/संकेत):

1. बाजार तो सजा-सजाया था, पर मन भरा था।
2. ज़रूरत तो थी, पर चाह नहीं थी।
3. वह गया तो था, पर लिया कुछ नहीं।

तीनों निपात एक साथ वाले दो वाक्य:

1. वह तो गया ही था बाजार, और कुछ लिया भी।
2. भगत जी को तो जीरा ही चाहिए था, दूसरी चीज़ें उन्हें भी नहीं लुभातीं।

---

**उत्तर: 'ही', 'भी', 'तो' निपात अर्थ पर बल देते हैं। ही — 'वही सफल होता है'; भी — 'वह बाजार गया और खाली हाथ भी लौटा'; तो — 'बाजार तो सजा था, पर मन भरा था'। तीनों एक साथ: 'वह तो गया ही था बाजार, और कुछ लिया भी।'**

## प्रश्नावली 11.5 — चर्चा करें

### प्रश्न 1

पर्चेजिंग पावर से क्या अभिप्राय है? बाजार की चकाचौंध से दूर पर्चेजिंग पावर का सकारात्मक उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? (संकेत — (क) सामाजिक विकास के कार्यों में, (ख) ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में।)

**हल**

पर्चेजिंग पावर का अर्थ:

पर्चेजिंग पावर (Purchasing Power) का अर्थ है — खरीदने की शक्ति, अर्थात व्यक्ति के पास जितना धन है उससे वह कितनी और क्या वस्तुएँ खरीद सकता है।

पाठ में लेखक बताते हैं कि पैसा पावर है, और उस पावर का प्रयोग अर्थात पर्चेजिंग पावर का उपयोग ही व्यक्ति को संतोष देता है — चाहे वह सामान खरीदने में हो या संचय में।

सकारात्मक उपयोग:

(क) सामाजिक विकास के कार्यों में —

पर्चेजिंग पावर का उपयोग शिक्षा संस्थाओं, चिकित्सालयों और सामाजिक कल्याण के कार्यों में दान देकर किया जा सकता है।

स्थानीय हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और लघु उद्यमियों का सामान खरीदकर हम उनकी आजीविका को सहारा दे सकते हैं।

(ख) ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में —

यदि उपभोक्ता गाँव के उत्पादों (खाद्य, वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, जैविक खेती के उत्पाद) को प्राथमिकता दे, तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होगी।

भगत जी का उदाहरण यहाँ प्रेरणादायक है — वे छोटी पंसारी की दुकान से सामान लेते हैं, न कि बड़े फैंसी स्टोर से। इससे छोटे व्यापारियों को लाभ होता है।

इस प्रकार पर्चेजिंग पावर का सोच-समझकर उपयोग न केवल व्यक्ति के लिए, बल्कि समाज और देश के लिए भी कल्याणकारी हो सकता है।

**उत्तर: पर्चेजिंग पावर = खरीदने की शक्ति। इसका सकारात्मक उपयोग — सामाजिक विकास के लिए दान/स्थानीय उद्यमियों को समर्थन और ग्रामीण उत्पादों को प्राथमिकता देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में — किया जा सकता है।**

## प्रश्नावली 11.6 — शब्द-छवि

### प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ मिलाइए — पर्चेजिंग पावर — ? असबाब — ? दरकार — ? परिमित — ? अतुलित — ? पेशगी — ? नाचीज — ? अपदार्थ — ? दारुण — ? अकिंचित्कर — ? स्पृहा — ? पसोपेश — ?

**हल**

पर्चेजिंग पावर — खरीदने की शक्ति
असबाब — सामान
दरकार — जरूरत
परिमित — सीमित
अतुलित — जिसकी तुलना न की जा सके
पेशगी — अग्रिम राशि
नाचीज — महत्त्वहीन
अपदार्थ — जिसका अस्तित्व न हो
दारुण — भयंकर
अकिंचित्कर — अर्थहीन
स्पृहा — इच्छा
पसोपेश — असमंजस

**उत्तर: पर्चेजिंग पावर = खरीदने की शक्ति; असबाब = सामान; दरकार = जरूरत; परिमित = सीमित; अतुलित = जिसकी तुलना न हो; पेशगी = अग्रिम राशि; नाचीज = महत्त्वहीन; अपदार्थ = जिसका अस्तित्व न हो; दारुण = भयंकर; अकिंचित्कर = अर्थहीन; स्पृहा = इच्छा; पसोपेश = असमंजस।**